आंतरभारती क्या है?

आंतर भारती क्या है?–

१९३० में, साने गुरुजी त्रिचनापल्ली जेल में थे। उस समय वे दक्षिण भारत के अनेक लोगों के संपर्क में आए। उन्होंने अनुभव किया कि अनेक भाषाओं की महिमा से हम अपरिचित हैं। हम भारत में रहते हुए भी यहाँ के विभिन्न क्षेत्रों में बोली जानेवाली भाषाएँ नहीं जानते। साने गुरुजी को हमेशा इस बात का मलाल रहता था कि, हमारे पास इन भाषाओं को सीखने के लिए ऐसी कोई संस्था नहीं है। यहीं से अंतरभारती की अवधारणा का जन्म हुआ।

जैसा कि उन्हें लगा कि, प्रांतवाद भारत की एकता में बाधक होगा, उन्होंने अंतर–भारती के साथ प्रयोग करने का फैसला किया, ता कि क्षेत्रीय घृणा दूर हो और मैत्रभाव का माहौल बढ़े, विभिन्न प्रांतों के लोग एक–दूसरे की भाषा सीख सकें और समझ सकें, एक दूसरे के रीति–रिवाज। अ.भा.मराठी साहित्य सम्मेलन में इसी प्रस्ताव पर बोलते हुए उन्होने कहा था कि, 'रवींद्रनाथ टैगोर के शांतिनिकेतन की तरह विभिन्न प्रांतीय भाषाओं को सीखने के इच्छुक छात्रों के लिए कुछ सुविधा की जानी चाहिए।' इसके लिए उन्होने कुछ पैसे भी जमा किए थे। लेकिन उन की जिंदगी में वह काम पुरा नही हो सका, ११ जून १९५० को उन्होंने इस दुनिया से बिदा ली।

साने गुरुजी कहा करते थे कि, प्रत्येक भारतीय को अपनी मातृभाषा छोड़कर दूसरी भारतीय भाषा सीखनी चाहिए। इसी उद्देश्य से उन्होंने अंतरभारती की अवधारणा का प्रस्ताव रखा।

साने गुरुजी का संक्षिप्त परिचय–

साने गुरुजी का नाम पांडुरंग सदाशिव साने था। गुरुजी का जन्म २४ दिसम्बर १८९९ को महाराष्ट्र के कोंकण में रत्नागिरी जिले के पालगढ़ गांव में हुआ था। वह अपनी मां की शिक्षाओं से काफी प्रभावित थे। उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया था।

१९२४ से १९३० छह साल तक प्रताप हाईस्कूल, अमलनेर, (जिला जलगाँव) में एक शिक्षक के रूप में काम किया। प्रताप हाईस्कूल के छात्रावास के प्रभारी होने पर उनके अंदर के शिक्षक को अधिक मौका मिला। उन्होंने दर्शनशास्त्र का भी अध्ययन किया। १९२८ में उन्होंने 'विद्यार्थी' नामक पत्रिका प्रारंभ की। वे महात्मा गांधी के विचारों से बहुत प्रभावित थे। वे स्वयं खादी का प्रयोग करते थे। १९३० में, उन्होंने एक शिक्षक के रूप में अपनी नौकरी छोड़ दी और सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया। उन्होंने 'कांग्रेस' नामक साप्ताहिक निकाला। सूखे के दौरान किसानों को टैक्स में छूट दिलाने की कोशिश की। उन्होंने जलगाँव जिले के फैजपुर में कांग्रेस अधिवेशन (१९३६) को सफल बनाने के लिए बहुत काम किया। उन्होंने महात्मा गांधी की विचारधारा पर चलते हुए शौच ढोना और गांव की सफाई का काम किया। १९४२ के आंदोलन में वे भूमिगत हो गए और स्वतंत्रता के लिए अभियान चलाया। साने गुरुजी ने 'राष्ट्र सेवा दल की' स्थापना की।

साने गुरुजी की देशभक्ती की कविताएं उनके पहले कविता संग्रह पत्री में प्रकाशित हुई। इसमें 'बलसागर भारत होवो' जैसी कविताओं का नागरिकों पर बढ़ता प्रभाव को देख कर ब्रिटिश सरकार ने उस कविता संग्रह की प्रतियां जब्त कर लीं थी। किसानो की मुक्ती के लिये उन्होने कई गीत लिखे।

साने गुरुजी ने हमेशा जाति–धर्म के भेदभाव, अस्पृश्यता जैसे समाज में अवांछनीय रीति–रिवाजों और परंपराओं का विरोध किया। उन्होंने १९४७ के दौरान अनुसूचित जाती के लोगो को सोलापुर जिले के पंढरपुर के विठ्ठल मंदिर में प्रवेश दिलाने के लिए महाराष्ट्र का दौरा किया। अंत में, इस मुद्दे पर उपवास का मार्ग अपनाया और सफलता प्राप्त की। १९४८ में 'साधना' साप्ताहिक प्रारंभ किया।

स्वतंत्रता के बाद उन्होंने अंतर–भारती आंदोलन के माध्यम से भारत को एकजुट करने का प्रयास किया। उन्होंने स्वयं तमिल, बंगाली और अन्य भाषाएँ सीखी थीं। उनकी कहानियों, उपन्यासों, लेखों, निबंधों, जीवनियों, कविताओं के माध्यम से हम उनकी साहित्यिक संवेदनशीलता को देख सकते हैं। उन्होंने कुल ७३ पुस्तकें लिखीं। अधिकांश लेखन जेल में रहते हुए किया। नासिक जेल में रहते हुए प्रसिद्ध उपन्यास 'श्यामची आई' लिखा। आचार्य विनोबा भावे की 'गीताई' का शब्दांकन साने गुरुजी ने धुलिया जेल (१९३२) में किया। साथ ही, बैंगलोर में जेल में रहते हुए, उन्होंने कवि तिरुवल्लीवर का तमिल महाकाव्य 'कुराल' का मराठी में अनुवाद किया। फ्रांसीसी उपन्यास 'लेस मिसरेबल्स' का मराठी में 'दुक्खी' शीर्षक के साथ अनुवाद किया। विश्व प्रसिद्ध मानव विज्ञानी हेनरी थॉमस की पुस्तक 'मानव जाति की कहानी' का मराठी में अनुवाद किया। उन्होंने 'भारतीय संस्कृति' नामक पुस्तक लिखी जो भारतीय संस्कृती का वास्तव दर्शन कराती है। 'शाम की मां' पर विख्यात पत्रकार प्रल्हाद केशव अत्रे ने फिल्म बनाई जिस की काफी स्तरहाना हुई। गुरुजी द्वारा लिखित कविता 'खरा तो एकची धर्म, जगला प्रेम अर्पावे' उन के जीवन का सूत्र माना जाता है। यह गीत मराठी स्कूलों में प्रार्थना के रूप में गाया जाता है।

आंतरभारती आंदोलन–

लागभाग ७५ वर्ष पूर्व साने गुरुजीने जो बीज बोया था, आज उस का वृक्ष बन गया है। यदुनाथ थत्ते, डॉ. सुब्बाराव, प्राचार्य सदाविजयजी आर्य जैसे दिग्गजोंने बडे परिश्रम से आंतरभारती को सिंचा है। आंतरभारती ना केवल एक रजिस्टर्ड संस्था

(E-195) है बल्की यह एक आंदोलन है। मानवता को रोकने वाली दिवारों को ध्वस्त करनेवाला तथा आपसी स्नेह को बल देनेवाला आंदोलन है।

जाती–धर्म का भेदभाव मिटाना है–

जाती या धर्म के कारण किसी से द्वेश करना, मानवता को क्षति पहुंचाना है। यह दिवार तोडने के लिये हम मानवी विवाहों (आंतरजातीय और आंतरधर्मीय) का समर्थन करते हैं। उन्हे बढावा देना मानवता के हित में है। आंतरभारती सेक्युलर समाज के निर्माण का प्रयास करती है। तथाकथित धर्माधिष्ठीत राज्य का हम विरोध करते हैं। हृदय की वाणी में विश्वास करते हैं।

एक भाषा और सीखो–

आंतरभारती के आजीवन सदस्य को मातृभाषा के अतिरिक्त कम से कम एक और भारतीय भाषा सीखनी चाहिये। इस के लिये आंतरभारती मोहीम चला रही है। अन्य भाषा सीखने की सुविधा उपलब्ध कराना आंतरभारती ने अपना दायित्व माना है।

आंतरभारती दिन–

१० मई को पंढरपूर के विठ्ठल मंदिर का द्वार सब के लिये खोला गया था. इस के लिये साने गुरुजी ने दस दिन अनशन किया था। एक बडे भेदभाव की दिवार जिस दिन ध्वस्त हुई, उस १० मई को हम आंतरभारती दिन मानते हैं। उसी दिन आम सभा होती है।

सर्जकों की आजादी–

शिवाजी महाराज, म. फुले, म. गांधी आदी अनेक महात्माओंने किसान और नारी की आजादी को प्राथमिकता दी है। यह दोनो घटक सर्जक हैं। आज देश में किसान आत्महत्या और नारी की भ्रूणहत्या हो राही है। ऐसी स्थिती में हम किसान और नारी की आजादी का समर्थन करते है। जाती–धर्म या मालिक-मजदूर के संघर्ष से गंभीर संघर्ष, किसान और औरतों के मुक्ती का अर्थात सर्जको का संघर्ष है।

निर्दलीय आंदोलन–

आंतरभारती निर्दलीय आंदोलन है। हमारा किसी भी राजनैतिक दल से संबंध नही है। हम गांधी के सिद्धांतों पर चलने वाले लोग हैं। म. गांधीने कहा था, 'मानवी जीवन में सत्ता का दखल कम से कम हो।' इस बात को हम पुरी तरह स्वीकार करते हैं और व्यक्ती की स्वतंत्रता को प्रधानता देते हैं।

आंतरभारती की रचना–

आंतरभारती की आजीवन सदस्यता फीस एक हजार रुपये है। जिस जगह कम से कम ११ आजीवन सदस्य होंगे वहां आंतरभारती की शाखा (unite) शुरू की जा सकती है। शाखा के पदाधिकारीयों के चुनाव के लिये ट्रस्ट की मंजुरी आवश्यक होगी। जिन राज्यो में एक भी शाखा नही होगी, वहां ट्रस्ट अस्थाई संयोजक या संयोजक मंडल नियुक्त कर सकता है। राज्य में तीन शाखा शुरू होन के बाद अस्थाई संयोजक या संयोजक मंडल विसर्जित हो जायगा।कार्यविस्तार हेतू आंतरभारती दूत नियुक्त किये जाते हैं।

नयी दिशा- नया कदम–

आंतरभारती में सतत विचार मंथन होता है. इस के लिये हर वर्ष एक चिंतन शिबीर का भी आयोजन किया जाता है। शिबीर न हो तो बैठक की जाती है। आंतरभारती का प्रयास रहता है की, जो काम और कोई नही करता, वह सही काम स्वयं करे। जो सही काम और लोग कर रहे है, उन का हात बटायें। नयी दिशा में नया कदम उठाने की चाह आंतरभारती को चैतन्यमय रखती है। इसी कारण आंतरभारती की शाखायें अपना वैशाष्ट्यपूर्ण कार्यक्रम करती आ रहीं हैं।

आंतरभारती का बाल आनंद महोत्सव एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। इसी के साथ शिक्षको, युवाओं, महिलाओं के साथ कई कार्यक्रम किये जाते है। 'भारत जोडो' के लिये आंतरभारती कार्यरत है।

जनसंपर्क–

आंतरभारती मासिक पत्रिका हम सब को जोडने का माध्यम रहा है। इस के द्वारा विविध कार्यक्रमों की जानकारी मिलती है। साथ ही वैचारिक लेख, कवितायें छापी जाती हैं। जनसंपर्क के लिये सोशल मिडिया का भी इस्तेमाल किया जाता है। फेसबुक, व्हाट्सअप पर कई ग्रुप्स काम कर रहे हैं। कोविड के जमाने में इन ग्रुपों ने सराहानीय कार्य किया था। आंतरभारती की वेब साईट भी कार्यरत है।

संपर्क–

अध्यक्ष– पांडुरंग नाडकर्णी (पणजी)– ९३२६१३९२५२ कार्याध्यक्ष– अमर हबीब (आंबाजोगाई)– ८४११९०९९०९
उपाध्यक्ष– संगीता देशमुख (वसमतनगर)– ९९७५७०४३११ सचिव– डॉ. डी. एस. कोरे (पुणे)– ८००७०२६०१
कोषाध्यक्ष– डॉ. उमाकांत चनशेट्टी (सोलापूर)– ९४२०४८८८७४ संपादक– डॉ. जयशंकर बाबू (पोद्दीचेरी)– ९४४२०७१४०७
सदस्य– प्रतापसिंह डांगी (इंदोर)– ९४२५३५३८३१, कुमार शुभमूर्ती (बिहार)– ७७८२९६५९९५, मनीषा राणी आर्य (हैद्राबाद)– ९३४७२२८३७२, आनंद मोहनजी माथुर (इंदोर) ९८२६०३८७६५.